शेर और चूहा

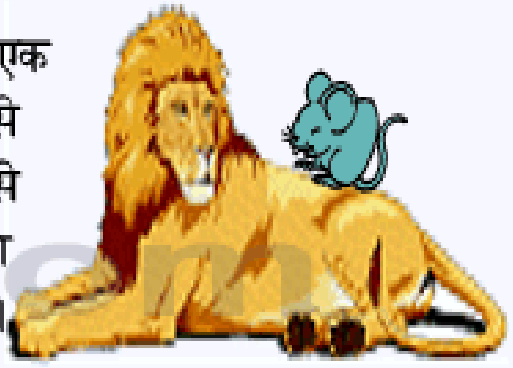

एक बार एक शेर अपनी गुफा में सो रहा था । तभी एक चूहा कहीं से आकर शेर के ऊपर कूदने लगा । जिससे शेर की नींद टूट गयी । शेर को चूहे पर इतनी ज़ोर से गुस्सा आया कि उसने उसे अपने पंजों में जकड़ लिया और उसे मारने का सोचने लगा। चूहा बहुत डर गया। उसने काँपते हुए शेर से कहा - "हे शेर राजा ! मुझे माफ कर दिजिये, मुझ से बहुत भारी भूल हो गई । अगर आप मुझे जाने देंगें तो आप का बहुत उपकार होगा और आपके इस उपकार को मैं वक्त आने पर जरूर चुका दूँगा।" यह सुनकर शेर को चूहे पर दया आ गई और उसने उसे जाने दिया । पर वह मन ही मन हँसा कि भला यह छोटा सा चूहा मेरा उपकार क्या चुकाएगा ।

समय बीतता गया ओर एक दिन हमेशा की तरह शेर शिकार की तलाश में जंगल में घूम रहा था कि एक शिकारी ने उसे चलाकी से अपने जाल में पकड़ लिया। शेर अपनी सहायता के लिए जोर-जोर से दहाड़ मारने लगा । शेर की अवाज सुनकर चूहा वहाँ आया । शेर को जाल में फँसा देखकर उसने तुरन्त अपने नुकीले दाँतों से शिकारी का जाल काट दिया और शेर को आज़ाद कर दिया । शेर ने चूहे का बहुत धन्यवाद किया । उस दिन शेर को समझ आया कि किसी भी प्राणी की काबलीयत उसके भारी रूप से नहीं लगानी चाहिए और कभी छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं करना चाहिए । हमेशा सबकी मदद करनी चाहिए क्योंकि जो दूसरों की मदद करता है, उसकी भी सब मदद करते हैं ।

अभ्यास कार्य

प्र. (1) नीचे दिये गए रिक्त स्थानों को कहानी की मदद से भरो–

1. एक चूहा कहीं से आकर उसके ऊपर .....लगा।
2. शेर को चूहे पर ..... आ गई और उसने उसे ..... दिया।
3. शिकारी ने चालाकी से उसे अपने ..... पकड़ लिया।
4. शेर की दहाड़ सुनकर ..... वहाँ आया।
5. हमें कभी छोटे–बड़े का ..... नहीं करना चाहिए।

प्र. (2) शेर गुफा में क्या कर रहा था ?

.....

.....

प्र. (3) शेर क्या सोंचकर हँसा ?

.....

.....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग